06/11/2020 कक्षा - नौ एवं दस

अपठित बोध

वह बोध जो पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों के बाहर से पूछा जाए, अपठित बोध कहलाता है।

अ + पठित अर्थात् जो पहले न पढ़ा गया हो।

यह एक ऐसी विधा है जिससे छात्रों में समझने की शक्ति का विकास होता है। अपठित सामग्री के प्रश्नों के उत्तर देना थोड़ा कठिन है किन्तु मुश्किल नहीं। अतः अपठित बोध को समझकर तथा गहराई में पहुँचकर ही इनसे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकते हैं। यह एक मानसिक व्यायाम है।

अपठित बोध के प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित सुझावों को ध्यान में रखें —

* गद्यांश अथवा पद्यांश की भाषिक संरचना, मुहावरे, लोकोक्तियों के अतिरिक्त मूल भाव को समझने के लिए उसे कम से कम दो-तीन बार पढ़ें।

* गद्यांश एवं पद्यांश को पुनः पढ़ते समय मुख्य बिंदुओं को चिह्नित करें।

* प्रश्नों एवं उनके उत्तर के लिए दिए गए विकल्पों को ध्यानपूर्वक दो या तीन बार पढ़ें। इससे उत्तर का चुनाव आसान हो जाता है।

* शीर्षक का चयन करते समय संक्षिप्तता और सरलता का विशेष ध्यान रखें।

अपठित बोध विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के साथ साथ विषय को ग्रहण करने की क्षमता का भी विकास करता है। इससे भाषा की संरचना, व्याकरण, आलोचना पद्धति और शिल्प ज्ञान के अतिरिक्त शब्दकोश में भी वृद्धि होती है।